Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत में वनों की कटाई : एक अध्ययन

डॉ. दिनेश कुमार कठुतिया*

* शासकीय स्वामी आत्मानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नारायणपुर (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – वन किसी भी देश की संपत्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। हमारे देश में वनों का संरक्षण अत्यधिक महत्व रखता है। वनों के संरक्षण की जिम्मेदारी सरकार पर होती है और यह कार्य वन विभाग के द्वारा किया जाता है। वन जलवायु पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैंय वे वर्षा आकर्षित करते हैं और नमी को संरक्षित रखते हैं। यह विशेष रूप से भारत जैसे शुष्क देश में एक महत्वपूर्ण कार्य है। वृक्षों की पत्तियों से वाष्पीकरण द्वारा वातावरण में ठंडक बनी रहती है। नमी संघनित होकर वर्षा के रूप में बरसती है। वनों को किसी भी प्रकार की हानि जलवायु को तेजी से बदल देती है। भारत में पहला वन अधिनियम 1865 में लागू हुआ था। इस कानून ने राजकुमारों को भारतीय वनों में कीमती वृक्षों की सुरक्षा के उद्देश्य से कानून बनाने की शक्ति प्रदान की। 1927 का भारतीय वन अधिनियम, जो अधिकांश राज्यों में लागू है, 1878 के भारतीय वन अधिनियम का संशोधित संस्करण है। वन की हानि को वनों की कटाई कहा जाता है। वनों की कटाई का मानव जीवन और पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। वन विभाग के सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में लगभग 75 मिलियन हेक्टेयर वन क्षेत्र है। हाल ही में उपग्रह से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, केवल 17 प्रतिशत क्षेत्र ही वन से ढका हुआ है। भारत हर साल 1.3 मिलियन हेक्टेयर वन क्षेत्र खो रहा है। पहाड़ी क्षेत्रों में वनों की कटाई इतनी गंभीर है कि इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी पर इसका गंभीर प्रभाव पड़ा है। हिमालय की मूल वनस्पति का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का धीरे-धीरे नुकसान हो रहा है। जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, सड़क निर्माण, खनन और अन्य विकासात्मक गतिविधियों के कारण वनस्पति और जीव-जंतुओं के प्राकृतिक आवासों को नुकसान पहुंचा है, जिससे जीवित संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ा है। कई वनस्पतियां और पशु प्रजातियां विलुप्ति या संकटग्रस्त के कगार पर हैं। भूस्खलन, सूखा, बाढ़, तूफान, भूकंप, बीमारियां, जल और वायु प्रदूषण और मानवीय हस्तक्षेप जैसी प्रतिकूल परिस्थितियां भी वनों के विनाश का कारण बन सकती हैं। अन्य प्रतिकूल कारक जैसे स्थिर मिट्टी की कमी, शुष्कता, दलदलीपन, जैविक एजेंसियां, वाणिज्यिक शोषण आदि भी वनस्पति की कमी के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। भारत की प्राकृतिक विविधता दुनिया में सबसे समृद्ध है, जो उपरोक्त कारकों के कारण धीरे-धीरे गायब हो रही है।

एफएओ की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में वार्षिक वनों की कटाई की दर 0.6 प्रतिशत (1981 से 1990 की अवधि के दौरान 0.34 मिलियन हेक्टेयर) थी। रविंद्र नाथ और हॉल (1944) के अनुसार, हर साल 144 मिलियन हेक्टेयर वनों का पुनरुत्थान किया गया। 1990 में, भारत में कुल वन क्षेत्र 70.6 मिलियन हेक्टेयर था, जिसमें से 27 प्रतिशत वाणिज्यि वृक्षारोपण के अंतर्गत था, जिसमें मुख्य रूप से नीलगिरी, सागौन और चीड़ शामिल थे। खोशोद (1986) के अनुसार, 1900 में विश्व में कुल वन क्षेत्र लगभग 7000 मिलियन हेक्टेयर था। 1975 तक यह घटकर 2890 मिलियन हेक्टेयर रह गया। 2000 ई. के अंत तक, यदि वनों की कटाई की वर्तमान प्रवृत्ति जारी रहती है, तो विश्व में कुल वन क्षेत्र लगभग 2370 मिलियन हेक्टेयर तक घट जाएगा। पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील हिमालय क्षेत्र में वन आवरण के विनाश से पानी की बढ़ती कमी, बार-बार भूस्खलन, बाढ़ में वृद्धि, नदियों में उच्च अवसादन, ईंधन और चारे की कमी और चरागाह भूमि में कमी के रूप में प्रतिकूल प्रभाव दिखने लगे हैं। वनों की कटाई के कारण जीवन समर्थक प्रणालियां बाधित हो रही हैं। भूमिगत जल स्तर धीरे-धीरे और गहराई तक जाता जा रहा है। भूमि का बड़ा क्षेत्र सूखे से प्रभावित हो रहा है और गर्मी के महीनों में कुएं, नलकूप, झीलें, तालाब आदि उम्मीद से जल्दी सूख जाते हैं।

कुमाऊं और गढ़वाल हिमालय में ओक के जंगल सामान्य वातावरण को बनाए रखते हैं और ग्रामीण चारे, ईंधन और अन्य आवश्यकताओं के लिए इन वनों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। लेकिन अब ओक के जंगल लोगों की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए नष्ट किए जा रहे हैं। इससे पर्यावरणीय स्थितियों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। ओक से जुड़ी समुदाय नष्ट हो रही है। यह औषधीय जड़ी-बूटियों और झाड़ियों के नुकसान का कारण बन सकता है जो ओक से जुड़ी होती हैं। चारे की उपलब्धता में कमी आएगी और पहाड़ी पारिस्थितिकी तंत्र में सदियों से चला आ रहा पशुधन संबंधी संबंध टूट जाएगा। रियो डी जेनेरियो में पृथ्वी शिखर सम्मेलन (1992) में वनों की कटाई से संबंधित मुद्दे पर प्रमुख चिंता जताई गई थी। यूएनसीईडी (संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन) के एजेंडा 21 में कहा गया था कि ष्वनों की कटाई के कई कारण हैं, कुछ प्राकृतिक, लेकिन अन्य मुख्य रूप से मानव विकास के कारण हैं, जैसे अनुचित भूमि स्वामित्व प्रणाली और प्रोत्साहन, कृषि क्षेत्रों का विस्तार, वन उत्पादों की बढ़ती मांग और वनों के मूल्य के बारे में जानकारी और समझ की कमी।

वनों की कटाई के सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभाव:

1. **मृदा की क्षति–** प्रकृति को एक इंच मिट्टी बनाने में लगभग 1,000 वर्ष लगते हैं, जबकि भारत की 12,000 मीट्रिक टन ऊपरी मिट्टी हर साल नदियों के नीचे बह जाती है, लंदन में एक रिपोर्ट कहती है (10.1. सितंबर 24, 1986)।
2. **खाद्यान्न की हानि–** मृदा अपरदन के परिणामस्वरूप देश हर साल 300-500 लाख टन खाद्यान्न खो देता है।
3. **बाढ़ से होने वाली हानि–** बाढ़ प्रभावित क्षेत्र 1950 के दशक में हर

साल औसतन 6.4 मिलियन हेक्टेयर से बढ़कर 1980 के दशक में 9 मिलियन हेक्टेयर हो गया। 1981–86 की अवधि के दौरान बाढ़ से हुई हानि अकेले 50,000 मिलियन रुपये थी।

4. हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र का खतरा– पूरा हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र खतरे में है और गंभीर असंतुलन में है क्योंकि हिमरेखा पतली हो गई है और स्थायी झरने सूख गए हैं।

5. वनों का ग्रीनहाउस में परिवर्तित होना– आंध्र प्रदेश में समशीतोष्ण वन क्षेत्रों को ग्रीनहाउस में बदल दिया गया है और तूफानी बारिश की तरह बारिश के दौरान पिटाई की जाती है।

6. सूखे की घटनाएँ– राजस्थान राज्य में सूखा पड़ना बहुत आम है। इसका बड़ा हिस्सा बंजर भूमि में परिवर्तित हो रहा है। तमिलनाडु और हिमाचल प्रदेश जैसे क्षेत्रों में भी लगातार सूखे शुरू हो गए हैं जहां वे पहले कभी नहीं होते थे।

वनों की कटाई के कारण: वनों की कटाई के पीछे कई कारण हैं। वनों की कटाई के विभिन्न कारण इस प्रकार हैं:

1. अतिचारण– वनों में अतिचारण नए पुनर्जीवित विकास को नष्ट कर देता है। यह मिट्टी को अधिक संकुचित और अभेद्य भी बना देता है। जैविक पदार्थों के विनाश के कारण मिट्टी कम उपजाऊ हो जाती है। अत्यधिक चराई वाली मिट्टी में कुछ प्रजातियों के बीज अंकुरित नहीं होते हैं, जिससे प्रजातियों की संख्या में कमी आती है। अतिचारण से मरुस्थलीकरण भी होता है। घरेलू जानवर इस प्रकार अपनी प्राकृतिक चराई और चारे के समर्थन से वंचित हो जाते हैं। अतिचारण मिट्टी के अपरदन को भी तेज करता है। मिट्टी के अपरदन के परिणामस्वरूप खनिजों और पोषक तत्वों का ऊपरी मिट्टी से हटना होता है और मिट्टी की संरचना प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है, जो अंततः उत्पादकता को कम कर देती है। उपग्रह इमेजरी डेटा से पता चलता है कि चरागाह भूमि के तहत क्षेत्र गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो गया है। वनों में अनियंत्रित और अनियंत्रित चराई से वन की मिट्टी का क्षरण होता है और वनों का प्राकृतिक पुनर्जीवन प्रभावित होता है।

2. झूम कृषि– यह पूर्वोत्तर भारत में सबसे आम है। भारी जल अपरदन के कारण झूम खेती स्थानीय रूप से झूम कहा जाता है। कई किसान कृषि और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए वनों को नष्ट कर देते हैं और जब बार-बार खेती करने के कारण मिट्टी की उर्वरता समाप्त हो जाती है, तो एक नया वन क्षेत्र नष्ट हो जाता है। इसलिए किसानों को सलाह दी जानी चाहिए कि वे खेती के लिए उसी भूमि का उपयोग करें और उन्नत कृषि विधियों का उपयोग करें। अनुमान है कि हर साल लगभग एक मिलियन हेक्टेयर भूमि झूम कृषि के कारण बंजर हो जाती है।

3. ईंधन की लकड़ी– वनस्पति की अधिकतम क्षति ईंधन की लकड़ी के लिए की जाती है। कुल ईंधन लकड़ी के उपयोग में लगभग 85 प्रतिशत का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में और 15 प्रतिशत का उपयोग शहरी क्षेत्रों में किया जाता है। 1987 में शहरों में वार्षिक ईंधन लकड़ी की खपत 134 मिलियन टन थी। भारतीय वन सर्वेक्षण (1987) के एक अनुमान के अनुसार, देश में ईंधन की लकड़ी की वार्षिक मांग 235 मिलियन क्यूबिक मीटर थी। इस प्रकार ईंधन की लकड़ी वनों की कटाई का एक प्रमुख कारण है।

4. वन की आग– बार-बार आग लगने से भारत में वनों के विनाश का प्रमुख कारण है। कुछ आग आकस्मिक होती हैं जबकि उनमें से अधिकांश जानबूझकर लगाई जाती हैं। भारतीय वन सर्वेक्षण (1996) द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार, औसतन 63.1% वनस्पति आग से प्रभावित होती है। आंकड़े आगे बताते हैं कि आग हर साल लगभग 0.5 मिलियन हेक्टेयर वन को नष्ट कर देती है।

5. काठ– काठ और प्लाईवुड उद्योग मुख्य रूप से वनों के वृक्षों के विनाश के लिए जिम्मेदार हैं। भारतीय वन सर्वेक्षण 1987 के अनुसार, वार्षिक मांग के मुकाबले 27 मिलियन क्यूबिक मीटर से अधिक काठ की आवश्यकता थी, जबकि वनों से लकड़ी की अनुमेय कटाई केवल 12 मिलियन क्यूबिक मीटर थी।

6. उद्योग स्थापना– कभी-कभी कारखाने वनों को नष्ट करने के बाद स्थापित किए जाते हैं। इस प्रकार थोड़े से लाभ के लिए अपूरणीय क्षति होती है। इस प्रक्रिया में कीमती पौधे, वन्यजीव और दुर्लभ पक्षी नष्ट हो जाते हैं और पर्यावरण की गुणवत्ता प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है। कारखाने को बंजर भूमि पर शहरी आबादी से दूर स्थापित किया जाना चाहिए। पहाड़ियों में वन आधारित उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति वनों के विनाश का एक और प्रमुख कारण है। रेजिन और तारपीन उद्योग जैसे वन आधारित उद्योग भी पहाड़ियों में वृक्षों के विनाश के लिए जिम्मेदार हैं।

7. वनों का अतिक्रमण– भारत में वनों की कटाई का एक और कारण आदिवासियों द्वारा कृषि और अन्य उद्देश्यों के लिए वनों की भूमि का अतिक्रमण है। भारतीय वन सर्वेक्षण के अनुसार, लगभग 7 मिलियन हेक्टेयर वन भूमि का कृषि के लिए अतिक्रमण किया गया है। हालांकि ऐसी भूमि कृषि उत्पादन के लिए अच्छा योगदान देती है, लेकिन पर्यावरणीय खतरों को भी उत्पन्न करती है। इसलिए वन भूमि को कृषि भूमि में बदलना उचित नहीं है।

8. वन रोग– परजीवी कवक, रस्ट, वायरस और नेमाटोड के कारण होने वाली कई बीमारियों के कारण वनस्पति का मृत्यु और क्षय होता है। नेमाटोड के आक्रमण के कारण युवा पौधों का विनाश हो जाता है। दिल की सड़न, ब्लिस्टर रस्ट, ओक विल्ट, फ्लोएम नेक्रोसिस और डच एल्म रोग जैसी कई बीमारियां बड़ी संख्या में वृक्षों को नुकसान पहुंचाती हैं।

9. भूस्खलन– पहाड़ियों में भूस्खलन के कारण वनों की कटाई एक बड़ी चिंता का विषय है। यह देखा गया है कि भूस्खलन मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में हुआ जहां पिछले कुछ दशकों से विकास गतिविधियां चल रही थीं। पहाड़ी इलाकों में सड़कों और रेलमार्गों का निर्माण, बड़े सिंचाई परियोजनाओं की स्थापना ने वनों को काफी हद तक नष्ट कर दिया है और अपक्षय की प्राकृतिक प्रक्रिया को तेज कर दिया है।

10. कटाव का निर्माण– बड़ी नदियों (यमुना और चंबल) के किनारे की वन और कृषि भूमि गंभीर कटाव के खतरे का सामना कर रही है। एक बार कटाव बनने के बाद, वे वनस्पति आवरण को नष्ट करते रहते हैं।

11. जनसंख्या में वृद्धि– भारत की जनसंख्या 1951 में 36 करोड़ थी। और यह हाल के वर्ष में 1.22 बिलियन तक पहुंच गई है। बढ़ती जनसंख्या को निवास के लिए भूमि की आवश्यकता होती है। इसलिए वे वनों की कटाई की आदत का उपयोग करते हैं।

निष्कर्ष – वनों की कटाई पर्यावरण के लिए एक गंभीर खतरा है। जब तक इस समस्या का तात्कालिक चिंता के साथ समाधान नहीं किया जाता, यह पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए हानिकारक साबित होगा। वन एक ऐसा स्रोत हैं जो पृथ्वी की जलवायु को संतुलित मोड में रखते हैं। वनों की कटाई पृथ्वी पर जलवायु के असंतुलित व्यवहार का कारण बनेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर।